

चाहा पुं. (देश.) 1. बगुले की तरह का एक जल का पक्षी 2. इच्छा किया हुआ, ऐच्छित।

चाहिए अव्य. (देश.) मुनासिब या उपयुक्त है, उचित है। यह शब्द "विधि-सूचक" होने से संयोजक क्रिया की भांति क्रियाओं में भी लगता है जैसे- आपको सदा सच बोलना चाहिए, आपको चोरी नहीं करनी चाहिए।

चाही वि. (देश.) 1. जो चाही जाए, जिसकी इच्छा की जाए चहेती, चाही हुई, वांछित (प्रायः समासांत में प्रयुक्त)।

चाहे क्रि.वि. (देश.) 1. इच्छा हो तो, मन माने तो 2. किंवा, अथवा जैसे- जैसा जी चाहे वैसा करो, इनमें से जिसे चाहे ले लो।

चिंआ पुं. (देश.) इमली का बीज।

चिंगारी स्त्री. (तद्.) चिनगारी।

चिंगुरना अ. क्रि. (देश.) 1. सिकुड़ना, पूरे फैलाव में बल पड़ने से कमी आना 2. बहुत देर तक एक स्थिति में रहने के कारण किसी अंग का जल्दी न फैलना।

चिंघाड़ स्त्री. (तद्.) चीत्कार, चीख मारने का शब्द, चिल्लाहट 2. हाथी की चिल्लाहट 3. गरजना।

चिंघाड़ना अ.क्रि. (तद्.) 1. चीखना, चिल्लाना 2. हाथी का चिल्लाना।

चिंचा स्त्री. (तत्.) 1. इमली, इमली का फल, 2. गुंजा 3. इमली का चिआँ।

चिंचाम्ना पुं. (तत्.) चूका या चूक नाम का साग 2. एक प्रकार का फेनक जो इमली से बनता है।

चिंचिका स्त्री. (तत्.) घुँघची, गुंजा।

चिंचिनी स्त्री. (तत्.) इमली का पेड़ या उसका फल।

चिंची स्त्री. (तत्.) 1. घुँघची 2. गुंजा।

चिंचोटक पुं. (तत्.) 1. चेंच 2. चेंच का साग, चिचाटक।

चिंजा पुं. (तद्.) बेटा, पुत्र, लड़का।

चिंजी स्त्री. (तद्.) कन्या, लड़की, बेटा।

चिंड पुं. (तत्.) 1. नृत्य का एक भेद, एक किस्म का नाच।

चिंतक वि. (तत्.) विचारक, दार्शनिक, ध्यान या मनन करने वाला पु. (तत्.) चिंतन-मनन करने वाला व्यक्ति।

चिंतन पुं. (तत्.) 1. विचार, मनन, ध्यान, विवेचन, बारबार याद या स्मरण, गौर।

चिंतना स.क्रि. (तद्.) 1. चिंतन करना, ध्यान करना, स्मरण करना, किसी के बारे में सोचना 2. सोचना-समझना, गौर करना स्त्री. सोच-विचार, मनन, गौर, बारंबार स्मरण।

चिंतनीय वि. (तत्.) 1. चिंतन या विचार करने योग्य 2. भावनीय 3. ध्यान देने योग्य, गौर करने योग्य 4. सोच-विचार के लायक।

चिंता स्त्री. (तत्.) 1. सोच, फ्रिक 2. भावना 3. परवाह 4. किसी दुख या सुख की आशंका से उपजी भावना या सोच-विचार 5. गंभीर विचार मनन, चिंतन मुहा. चिंता लगना- सतत सोच-विचार या चिंता बनी रहना, कोई चिंता नहीं-कोई परवाह नहीं; साहित्य में 'चिंता' को करुण रस का व्यभिचारी भाव माना जाता है, अतः वियोग की दस दशाओं में से चिंता को दूसरी दशा माना गया है।

चिंताकुल वि. (तत्.) चिंता से व्यग्र।

चिंतातुर वि. (तत्.) फिक्रमंद, चिंता से घबराया हुआ।

चिंतामग्न वि. (तत्.) गहरे विचार से लीन।

चिंतामणि पुं. (तत्.) 1. वह कल्पित रत्न जिसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह सभी अभिलाषाओं को पूर्ण कर देता है 2. ब्रह्म 3. परमेश्वर 4. बुद्ध का एक नाम 5. घोड़े के गले की एक भौंरी जो बहुत शुभ मानी जाती है 6. वह घोड़ा जिसके गले में भौंरी होती है 7. यात्रा का योग 8. वैद्यक के अनुसार पारा, गंधक, अभ्रक और जयपाल (जमालगोटा) के योग से बनने वाली रससिद्ध औषधि।